डेविड ईस्टन का व्यवस्था उपागम सिद्धांत

(आगत - निर्गत मॉडल)

डेविड ईस्टन ने वर्ष 1953 में प्रकाशित "The Political System: An Inquiry into the State of Political Science" में राजनीति विज्ञान में एक नया व्यवस्था सिद्धांत निर्माण का विचार प्रस्तुत किया। डेविड ईस्टन ने 'राजनीतिक व्यवस्था का विश्लेषण, 'आगत एवं निर्गत के माध्यम से किया। डेविड ईस्टन ने राजनीतिक व्यवस्था का विश्लेषण करते हुए इसे 'मूल्यों के आधिकारिक आवंटन' के रूप में व्यक्त किया। इन्होंने राजनीतिक व्यवस्था का विश्लेषण, "निरंतर चलने वाले प्रवाहों (system of flows) के रूप में व्यक्त किया। डेविड ईस्टन के राजनीतिक व्यवस्था के विश्लेषण में अत्यधिक गति पाई जाती है और व्यवस्था सदैव चलती रहती है। इसे ईस्टन ने पुनर्निवेश के माध्यम से गतिशीलता प्रदान की। डेविड ईस्टन व्यवस्था अनुरक्षण तथा व्यवस्था अवस्थिति में विभेद करता है।

आगत :→ ईस्टन के अनुसार 'समाज या पर्यावरण से आने वाली मांग एवं समर्थन आगत है।' इनके अनुसार, मांग के निम्नलिखित प्रकार होते हैं:—

(i) सेवाओं एवं वस्तुओं के वितरण की मांग।
(ii) व्यक्तियों के व्यवहारों के नियंत्रण की मांग
(iii) राजनीतिक व्यवस्था में सहभागिता की मांग
(iv) संचार एवं सूचना की मांग।

समर्थन के निम्नलिखित प्रकार होते हैं:—

(i) भौतिक समर्थन
(ii) विधि का आज्ञापालन द्वारा समर्थन
(iii) राजनीतिक क्रियाओं में सहभागिता की मांग
(iv) सांकेतिक रूप में समर्थन।

SATURDAY
FEBRUARY
24

निर्णय निर्गत या अभिव्यक्ति राजनीतिक व्यवस्था के निर्णयों एवं क्रियाओं से है।

पुनर्निवेश :-

पुनर्निवेश के निम्नलिखित कार्य होते हैं :-

(i) राजनीतिक व्यवस्था द्वारा पर्यावरण से राजनीतिक सूचना प्राप्त की जाती है।

(ii) जिसके माध्यम से राजनीतिक व्यवस्था अपने कार्यों के लिए समर्थन प्राप्त करती है।

(iii) व्यवस्था केवल प्रभावित स्तरों को भी प्राप्त होती है।

(iv) पुनर्निवेश के माध्यम से राजनीतिक व्यवस्था, भविष्य की मांगों को भी प्राप्त करती है।

गेट कीपिंग (नियंत्रण व्यवस्था) डेविड ईस्टन ने राजनीतिक व्यवस्था को अतिभार से बचाने के लिए 'गेट कीपिंग' की व्यवस्था की है।

डेविड ईस्टन ने राजनीतिक व्यवस्था की अतिभार से बचाए रखने के लिए निम्नलिखित उपायों का वर्णन किया :-

(i) राजनीतिक व्यवस्था में अनियंत्रित और बेरोकटोक मांगें प्रवेश न कर सकें।

(ii) राजनीतिक व्यवस्था द्वारा कुछ ऐसे सांस्कृतिक एवं सामाजिक मानकों का निर्माण किया जाता है, जिससे प्रतिकूल मांगों को अस्वीकृत कर दिया जाता है।

आलोचना :- आलोचकों के अनुसार ईस्टन ने अपने अध्ययन में यथास्थितिवाद पर बल प्रदान किया। इनका यह मॉडल विकासशील देशों और साम्यवादी देशों में प्रभावी रूप से लागू नहीं किया जा सकता।

ईस्टन ने अपने अध्ययन में शक्ति के अध्ययन की उपेक्षा की।

परिवेश की बात करते हैं। लेकिन परिवेश क्या है? परिभाषित नहीं किया।

ईस्टन द्वारा प्रस्तुत राजनीति विज्ञान की परिभाषा :- राजनीति विज्ञान, मूल्यों का आधिकारिक आवंटन 2018